बी.ए.-III

प्रथम प्रश्न-पत्र

समाजशास्त्रीय विचारधारा के आधार

(Foundations of Sociological Thought)

By: Dr. Purnima Kumari Pal.

Department of Sociology

Harish Chandra P.G College

समाजशास्त्र का उदभव : सामाजिक दर्शन से समाजशास्त्र का पारगमन (Emergence of Sociology: Transition from Social Philosophy to Sociology)

समाजशास्त्र का औपचारिक उदभव एवं विकास

(Formal Origin and Development of Sociology)

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में समाज के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख विविध प्रकार से किया गया है। उदाहरणार्थ-वैदिक साहित्य एवं हिन्दू शास्त्रों (जैसे उपनिषदों, महाभारत एवं गीता आदि ग्रन्थों) में वर्ण एवं जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार प्रणाली, आश्रम व्यवस्था, विभिन्न संस्कारों तथा ऋण व्यवस्था जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण सामाजिक पहलुओं का विधिवत् विवरण मिलता है जोकि आज के समाजशास्त्रीय विश्लेषणों के किसी भी मापदण्ड द्वारा कम नहीं है। अरस्तू की पुस्तक पोलिटिक्स, प्लेटो की रिपब्लिकतथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें समाज के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है।

19वीं शताब्दी में हआ. जबकि ऑगस्त कॉम्ट ने सर्वप्रथम 1838 ई० में समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार था कि कोई भी विषय ऐसा नहीं है जोकि समाज के विभिन्न पहलुओं का समग्र के रूप में अध्ययन कर सकता हो। इस कमी को दूर करने के लिए उन्होंने इस नवीन विषय का निर्माण किया।

19वीं शताब्दी में समाजशास्त्र के विकास में अनेक बौद्धिक एवं भौतिक परिस्थितियों ने सहायता प्रदान की, जिनमें से निम्नलिखित चार बौद्धिक परिस्थितियों को टी० बी० बॉटोमोर ने महत्त्वपूर्ण माना है

(1) राजनीति का दर्शन (Political philosophy),

(2) इतिहास का दर्शन (The philosophy of history),

(3) उद्विकास के जैविक सिद्धान्त (Biological theories of evolution) तथा.

(4) सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारात्मक आन्दोलन (The movements for social and political reform)।

इतिहास के दर्शन तथा सामाजिक सर्वेक्षण (जोकि आन्दोलनों के परिणामस्वरूप शुरू हुए), ने प्रारम्भ में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। एक विशिष्ट शाखा के रूप में इतिहास का दर्शन अठारहवीं शताब्दी की देन है जिसे अबे डे सेंट-पियरे (Abbe de Saint-Pieare) तथा ग्यिम्बाटिसटा विका (Giambattista Vico) ने शुरू किया। प्रगति के जिस सामान्य विचार को निर्मित करने का उन्होंने प्रयत्न किया उसने मानव की इतिहास सम्बन्धी धारणा को गम्भीर रूप से प्रभावित किया।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हीगल (Hegel) तथा सेण्ट-साइमन (Saint-Simon) के लेखों के परिणामस्वरूप इतिहास का दर्शन एक प्रमुख बौद्धिक प्रभाव बन गया। इन्हीं दोनों विचारकों से कार्ल मार्क्स (Karl Marx) तथा ऑगस्त कॉम्ट (Auguste Comte) की रचनाएँ विकसित हुई।

आधुनिक समाजशास्त्र के विकास में सहायक दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व सामाजिक सर्वेक्षण कहा जा सकता है जिसके दो प्रमुख स्रोत थे—प्रथम, यह विश्वास कि प्राकृतिक विज्ञान की पद्धतियों को सामाजिक घटनाओ एवं मानव क्रियाकलापों के अध्ययन में प्रयुक्त किया जा सकता है, और दूसरा, यह विश्वास कि गरीबी प्रकृति या दैवी प्रकोप नहीं है अपितु मानव प्रयास द्वारा इसे दूर किया जा सकता है। इन दोनों विश्वासों के परिणामस्वरूप समाज सुधार के लिए किए गए आन्दोलनों का 18वीं तथा 19वीं शताब्दी के पश्चिमी यूरोप के सामाजिक परिस्थितियों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध था।

बाल्डरिज (Baldridge), ने उन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दशाओं का भी वर्णन किया है जिन्होंने समाजशास्त्र के विकास को प्रेरित किया है। वे दशाएँ निम्नलिखित हैं।

(1) वैज्ञानिक क्रान्ति (Scientific revolution)

वैज्ञानिक क्रान्ति का सूत्रपात 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही हो गया था।1600 ई० में एक व्यक्ति को इसलिए जिन्दा जला दिया गया था कि उसने ब्रह्माण्ड को असीमित बताने की हिमाकत की थी। 1700 ई० आते-आते सर आइजक न्यूटन (Sir Isaac Newton), जो असीम ब्रह्माण्ड के संचालित होने के नियमों को खोजने का प्रयास कर रहे थे । 19वीं शताब्दी में इस पर जोर दिया गया कि सामाजिक संरचना और समस्याओं को समझने में समझने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व पद्धति का प्रयोग किया जाए। वैज्ञानिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप वैज्ञानिक पद्धति की श्रेष्ठता सिद्ध हो चुकी थी ।

पश्चिम यूरोप में नित्य नये आविष्कार हो रहे थे। अध्ययन के लिए तथ्यों के अवलोकन, वगीकरण विश्लेषण की यह पद्धति समाज एवं सामाजिक जीवन के अध्ययन के लिए भी उपयोगी एवं आवश्यक समझी जाने लगी थी।

(2) प्रौद्योगिकीय तथा औद्योगिक क्रान्ति (Technological and industrial revolution)

उत्पादन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकीय क्रान्ति का सूत्रपात हुआ और पुराने तरीके बेकार सिद्ध होने लगे। विज्ञान और तकनीकी के प्रयोग ने औद्योगिक क्रान्ति को जन्म दिया और बड़ी मशीनों द्वारा बृहत् स्तर पर उत्पादन प्रारम्भ हुआ।

नगरीकरण ने छोटे-छोटे कृषि समुदायों का हास कर दिया। कृषि के स्थान पर उद्योग धन का स्रोत बन गए।

(3) बाजारों के विस्तार एवं साम्राज्यवाद के परिणामस्वरूप विभिन्न संस्कृतियों का सामना (Exposure to different cultures due to expansion of markets and imperialism)

यूरोप के देशों-स्पेन, फ्रांस, इंग्लैण्ड, पुर्तगाल, डेनमार्क-का अमेरिका, अफ्रीका व एशिया में। उपनिवेश स्थापित करने की प्रक्रिया 16वीं शताब्दी में ही प्रारम्भ हो गई थी। युरोप के लोग ऐसे समाजों के सम्पर्क में। आए जो उनसे सर्वथा भिन्न थे। इन सांस्कृतिक सम्पकों के दो स्वाभाविक परिणाम हुए प्रथम, मानव समाज में बहत तथ्य एकत्रित हो गए जिनके आधार पर मानव-समाज की संरचना एवं गत्यात्मकता के सम्बन्ध में सामान्य निष्कर्षों पर पहुंचने में सगमता हई दितीय, विभिन्न संस्कृतियों के साथ होने वाले अनुभवों ने यूरोप के निवासियों को अपने समाज पर भी आलोचनात्मक दृष्टि डालने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, सामाजिक आलोचना को वैधता प्राप्त हुई।

(4) राजनीतिक क्रान्ति (Political revolution)

इंग्लैण्ड और फ्रांस में बढ़ते हुए उद्योगवाद ने सामन्तवादी व्यवस्था को चुनौती दी और वहाँ प्रजातान्त्रिक क्रान्तियाँ घटित हुई। इससे पूर्व अमेरिका में घटित क्रान्ति 1783-1789) प्रजातन्त्र, राजनीति में समानता, भ्रातृत्व व स्वतन्त्रता के आधार पर जन सहभागिता वाली व्यवस्था के विकास की एक आवश्यक कड़ी सिद्ध हुई। 19वीं शताब्दी शनैः शनैः गणतन्त्रीय प्रणाली के विकास की शताब्दी बन गई है।

(5) समाज सुधार आन्दोलन (Social reform movements)

यूरोप और अमेरिका के देशों में, जहाँ इतनी क्रान्तिकारी घटनाएं हो रही हों, अनेक सामाजिक समस्याएं पैदा हो गई थीं। भुखमरी और बेकारी सबसे बड़ी समस्याएँ थीं। इन समस्याओं को हल करने के लिए अनेक समाज सुधार आन्दोलन हुए। ये आन्दोलन नयी विचारधारा एवं लक्ष्य सामने रख रहे थे। इंग्लैण्ड उपर्युक्त समस्याओं का सबसे अधिक शिकार था। अत: उसी को यह श्रेय है कि उसने । सामाजिक विधानों द्वारा स्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में भी पहल की संसद फैक्टरी-नियन्त्रण और। सामाजिक सुधार का मंच बन गई। 1802 ई० में पहला फैक्टरी एक्ट पारित हुआ जिसके द्वारा कुछ सरकारी । उद्योगों ने नौ वर्ष से कम की आय के बालकों से 12 घण्टे प्रतिदिन से अधिक कार्य लेने को निषिद्ध कर दिया। बाद में 1832. 1942. 1847 व 1855 ई० में फैक्टरी एक्ट पारित कर श्रमिकों की कार्य दशाओं को उन्नत करने के प्रयास किए गए। ये विधान अन्य देशों के लिए भी आदर्श बन गए।

बोटोमोरे (Bottomore) का कहना है की इस प्रकार समाजशाष्त्र का पूर्व इतिहास सौ वर्षो की उस अवधी से सम्बंधित है जो लगभग 1740 से 1850 तक की है । उन्होंने 19वी शताब्दी में विक्सित समाजशास्त्र की तीन विशेषताओ का भी उल्लेख किया है ।

(1) यह विश्वकोशीय (Encyclopaedic)

(2) यह उद्विकासवादी (Evolutionary)

(3) यह निश्चयात्मक (Positive)

सामाजिक दर्शन से समाजशास्त्र का पारगमन

(Transition from Social Philosophy to Sociology)

यूरोप में सामाजिक दर्शन को विक्सित करने में अनेक परिस्थियों , कारको अथवा शक्तियों की महतवपूण भूमिका रही है । सामाजिक दर्शन से समाजशास्त्र को पारगमन की दृष्टि से ज्ञानोदय तथा फ्रांस की क्रांति एवं अधोगिक क्रांति जैसी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनितिक शक्तियों की विशेष भूमिका रही है। इसे निम्न प्रकार से स्पस्ट किया जा सकता है :

(अ) ज्ञानोदय (Enlightenment)- यूरोप के आधुनिक युग का प्रारम्भ पुनर्जागरण अथवा नवजागरण से माना जाता है। पुनर्जागरण की शुरुआत इटली में 14वीं शताब्दी में हुई थी। जब इंग्लैण्ड और फ्रांस एक-दूसरे के साथ लगभग सौ वर्ष तक युद्धरत रहे, तब उत्तरी इटली के नगर निरन्तर रूप से वाणिज्य के माध्यम से आर्थिक समृद्धि अर्जित करते रहे। यह उत्साह 1350 ई० से लेकर 1550 ई० तक अर्थात् लगभग दौ सौ वर्ष निरन्तर बना रहा। इसी युग को पुनर्जागरण का। युग कहा जाता है। ज्ञानोदय का युग इसी का परिणाम माना जाता है।

18वीं शताब्दी में ज्ञानोदय बौद्धिक विकास एवं दार्शनिक विचारधारा में परिवर्तन का युग था। न्यूटन के। विज्ञान की भाँति इस युग के विचारकों ने तर्क को आनुभविक अनुसन्धान से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने विचारधारा के अत्यन्त क्रमबद्ध ज्ञान को विकसित किया जिसमें न केवल तर्क सन्निहित था अपितु यह यथार्थ विश्व के अवलोकन पर भी आधारित था। विश्व को तर्क एवं अनुसन्धान द्वारा समझने एवं नियन्त्रित करने के। बारे में आश्वस्त यह विज्ञान परम्परागत सामाजिक मूल्यों एवं संस्थाओं को अतार्किक मानते हए इन्हें मानव विकास में अवरोधक स्वीकार करने लगे।

अत: अमूर्त दार्शनिक विचारधारा तथा आनुभविक दर्शन से बारे में एक नवीन व्यवस्था प्रारम्भ हुई जिसमें प्राचीन व्यवस्था एव विशेषाधिकारों के विरविज्ञान, वैज्ञानिक पद्धति एवं शिक्षा में विश्वास पर बल दिया जाने लगा ।

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही लौकिकीकरण अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। इस प्रक्रिया का सूत्रपात तो इटली में हुए पुनर्जागरण में हो गया था जो 1350 से 1550 तक चलता रहा। इस प्रक्रिया को बल यूरोप में 1715 से 1789 ई० तक घटित होने वाली राजनीतिक साहित्यिक घटनाओं से भी मिला। वास्तव में, यूरोप में इन 75 वर्षों को 'तर्क का युग' (Age of reason) कहा जाता है।

इटली में प्रारम्भ हुई पुनर्जागरण की प्रक्रिया, प्रोटेस्टैण्ट विद्रोह तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों ने मानव को धर्म की बेड़ियों से मुक्त कराया। इन सभी शक्तियों ने जनसाधारण के मन में लौकिकवाद के प्रति आस्था पैदा की।

लौकिकवाद का अर्थ 'धर्म का विरोध' अथवा 'धर्म के प्रति तटस्थता' या 'धर्मनिरपेक्षता' नहीं है। इसका आशय तो यह है कि संसार सत्य है। मानव का जीवन बड़ा पुण्यमय है। वह अपने परिश्रम द्वारा अपनी भौतिक स्थिति में सुधार कर सकता है। धर्म पूजा-पाठ व ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन की एक पद्धति है और उसे वहीं तक

सीमित रहना चाहिए। सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्रियाएँ लौकिक क्रियाएँ हैं, धार्मिक क्रियाएँ नहीं। इस लौकिकवाद ने शासनतन्त्र के लिए समरूपता, कार्यक्षमता व व्यवस्था के आदर्शों पर बल दिया। सामाजिक संरचना के लिए मानववाद, समानता, व्यक्ति के मौलिक अधिकार व मुक्त सामाजिक गतिशीलता जैसे आदर्शों की स्थापना की। इस प्रकार, अनेक ऐसी धार्मिक निषेधाज्ञाएँ जो समाज के अध्ययन के विरुद्ध लगी हुई थीं 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक तिरोहित हो गई। इससे समाज के वैज्ञानिक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ। जिसने समाजशास्त्र के विकास की आधारशिला रखी।

(ब) सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियाँ (Social, Economic and Political Force)

ज्ञानोदय के बौद्धिक सन्दर्भ के अतरिक्त १९वी शताब्दी और २०वी शताब्दी के प्राम्भ में सामाजिक दसाओ की समाजशास्त्र के विकास में महतवपूर्ण भूमिका रही है ।

(1) **फ्रांस की क्रान्ति (French revolution)-** 1789 में फ्रांस की क्रान्ति द्वारा प्रारम्भ हुए राजनीतिक आन्दोलनों से जो अव्यवस्था एवं असन्तुलन विकसित हुआ उसमे अनेक सिद्धान्तकार आश्चर्यचकित हो गए। यह क्रान्ति पुनर्जागरण का चरमोत्कर्ष थी। पुनर्जागरण और ज्ञानोदय के दौरान जिस मानववाद को जन्म मिला था वह इस क्रान्ति कवार हुआ।मानव की स्वाभाविक स्वतन्त्रता और समानता के सिद्धान्त को लेकर घटित इस क्रान्ति ने सिद्ध कर दिया कि मानव अस्तित्व और विकास की स्वाभाविक शर्त उसकी स्वतन्त्रता है। यही कारण है कि मानव कमा अधिकारों को मान्यता प्राप्त हुई। मानव के इतिहास में धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णता और लौकिकवाद आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हुए। फ्रास का क्रान्ति ने राष्ट्रवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। राज्य के कल्याणकारी स्वरूप का उदय भी फ्रांस की क्रान्ति के दौरान हुआ। यही भ्रातृत्व की भावना धीरे-धीरे विकसित होकर विश्व-बन्धुत्व (Universal brotherhood) की भावना में बदल सकती है। फ्रांस के द्वारा दिखाया गया मानव भ्रातृत्व का यह मार्ग आज भी विश्व शान्ति के लिए एक सच्चा मार्ग है।

(2) **औद्योगिक क्रान्ति (Industrial revolution)-** औद्योगिक क्रान्ति का अग्रदूत पुनर्जागरण का युग माना जाता है जिसने फ्रांस की क्रान्ति तथा स्वतन्त्रता हेतु अमेरिकी युद्ध काल में 15वीं शताब्दी से प्रारम्भ होकर उत्तर की ओर बढ़ते हुए सम्पूर्ण यूरोप को अपनी चपेट में ले लिया। पुनर्जागरण ने सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में समाज के सम्पूर्ण दृष्टिकोण को बदल दिया। यह नवीन साल पद्धति ही थी जिसने औद्योगिक क्रान्ति लाने में सहायता दी। कारखानों में होने वाले बड़े पैमाने पर उत्पादन ने। सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को ही बदल दिया। औद्योगिक व्यवस्था एवं पूंजीवाद के प्रति प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप श्रमिक एवं अन्य अतिवादी आन्दोलन प्रारम्भ हुए जिनका उद्देश्य पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेकना था । 1750 ई० को इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ वर्ष माना जाता है। यह क्रान्ति लगभग सौ वर्ष अर्थात 1850 ई० में पूर्ण हुई। इस क्रान्ति ने वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया में मशीनों के प्रयोक का प्रचलन किया। श्रमिकों के स्वर्ग के रूप में समाजवाद का उदय हुआ जिसमें धन का वितरण काफी सीमा तक समान था। कार्ल मार्क्स पूंजीवादी व्यवस्था का घोर विरोधी था तथा उसने उन राजनीतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जो पूंजीवाद के पतन में सहायक थी। आधुनिक मानव समाज की संरचना ,विचार, व्यवस्था एवं समस्याओं को समझना है तो यूरोप के आधुनिक इतिहास को समझना होगा। विशेषतया समाजशास्त्रीय चिन्तन के लिए तो इस प्रकार का अध्ययन एक अनिवार्य शत है क्योंकि समाजशास्त्र का उदय पश्चिमी यूरोप में ही हुआ।

19वी शताब्दी में बौद्धिक विकास के परिणामस्वरूप समाज के सभी क्षेत्रों में नये विचार दर्शन उत्पन्न हुए। राजनीति के क्षेत्र में रूढ़िवाद, उदारवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद और मार्क्सवाद सुदृढ़ विचार दर्शनों के रूप में विकसित हुए। समाजशास्त्र के क्षेत्र में भी अनेक विचार सम्प्रदायों का उदय हुआ; जैसे—विकासवाद, प्रगतिवाद, यथार्थवाद, प्रौद्योगिकीय निर्णयवाद, आर्थिक निर्णयवाद, सावयवीवाद, समाजशास्त्रीयवाद आदि।

समाजशास्त्र के विकास का बौद्धिक सन्दर्भ (ज्ञानोदय) तथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक । शक्तियाँ (प्रमुख रूप से फ्रांस की क्रान्ति एवं औद्योगिक क्रान्ति) के परिणामस्वरूप लौकिकवाद व्यक्तिवाद, उदारवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद, माक्र्सवाद जैसे विचारधाराएं विकसित हुई जिन्होंने मानव के सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। इनमे एक नवीनसामाजिक दर्शन का भी विकास हुआ जिसका लक्ष्य मानव में अन्तर्निहित सभी शक्तियों के विकास को सम्भव बनाना और इस धरा पर उसके जीवन को आनन्दमय बनाना था। यही वह दर्शन है जिसने समाजशास्त्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भमिका निभाई है। समाजशास्त्र का उदय 19वी शताब्दी में हुआ फ्रांस के चिंतक ऑगस्टे कोम्टे (Auguste Comte: 1798-1857) को 'समाजशास्त्र' (Sociology) शब्द की रचना का श्रेय दिया जाना चाहिए। उसने समाज के एक प्रथक विज्ञानं की अवसक्ता पर बल दिया, उस विज्ञानं की रूपरेखा प्रस्तुत की और उसके लिए उपुक्त अध्यन पद्धति का भी निरूपण किया। 1838 में Sociology का एक नए विघ्याँ के रूप में अभिभाव हुआ। इस्माइल दुर्खीम (Emile Durkheim : 1858 -1917) ने समाजशास्त्र को ठोस धरातल प्रदान किया, उसकी अध्यन पद्धति को परिस्कृत किया, उसके वैज्ञानिक स्वरुप को सँवारा और सामाजिक व्यवस्था, आत्महत्या, कानूनी संहिताएँ एवं धर्म जैसे गूढ़ विषयों का वैज्ञानिक अध्ययन करके दिखाया। 19वीं सदी के महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी कार्ल मार्क्स (Karl Marx : 1818-1883) ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग संघर्ष की एक ऐसी विचारधारा प्रदान की जिसने मानव जाति के इतिहास को एक नया मोड़ दिया। जर्मनी के ही मैक्स वेबर (Max Weber : 1864-1920) ने शक्ति एवं सत्ता, अधिकारीतन्त्र तथा पूँजीवाद के विकास पर इतना सशक्त साहित्य रचा कि आज भी अनेक समाज-मनोवैज्ञानिकों को मार्गदर्शन दे रहा है। ये सभी विचारक 19वीं शताब्दी के यूरोप की ही उपज थे। ये सभी विचारक 19वीं सदी में पश्चिमी यूरोप में विद्यमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दशाओं या शक्तियों से प्रभावित थे। यही वह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है जिससे समाजशास्त्र का सामाजिक दर्शन से समाजशास्त्र के रूप में पारगमन हुआ।